णमोकार चालीसा

सब सिहों को नमन कर, सरस्वती को ध्याय।
चालीसा नवकार का, लिखूं त्रियोग लगाय।।

महामंत्र नवकार हमारा, जन-जन को प्राणों से प्यारा।।१।।
मंगलमय यह प्रथम कहा है, मंत्र अनादि निधन महा है।।२।।
षट्खण्डागम में गुरुवर ने, मंगलाचरणं लिखा प्राकृत में।।३।।
यहीं से ही लिपिबद्ध हुआ है, भवि जन ने डर धार लिया है।।४।।
पाँचों पद के पैंतीस अक्षर, अट्ठावन मात्रा हैं सुखकर।।५।।
मंत्र चौरासी लाख कहाए, इससे ही निर्मित बतलाए।।६।।
अरिहन्तों को नमन किया है, मिथ्यातम को वमन किया है।।७।।
सब सिद्धों को वन्दन करके, झुक जाते भावों में भरके।।८।।
आचार्यों की पदभक्ति से, जीव उबरते निजशक्ति से।।९।।
उपाध्याय गुरुओं का वन्दन, मोह तिमिर का करता खण्डन।।१०।।
सर्व साधुओं को मन लाना, अतिशयकारी पुण्य बढ़ाना।।११।।
मोक्षमहल की नींव बनाता, अतः मूलमंत्र कहलाता।।१२।।
स्वर्णाक्षर में जो लिखवाता, सम्पत्ति से टूटे नहीं नाता।।१३।।
णमोकार की अद्भुत महिमा, भक्त बने भगवन् ये गरिमा।।१४।।
जिसने इसको मन से ध्याया, मनचाहा फल उसने पाया।।१५।।
अहंकार जब मन का मिटता, भव्यजीव तब इसको जपता।।१६।।
मन से राग-द्वेष मिट जाता, समात भाव हृदय में आता।।१७।।
अंजन चोर ने इसको ध्याया, बने निरंजन निजपद पाया।।१८।।

पार्श्वनाथ ने इसे सुनाया, नाग-नागनी सुरपद पाया।।१९।।
चाकदत्त ने अज को दीना, बकरा भी सुर बना नवीना।।२०।।
सूली पर लटके कैदी को, दिया सेठ ने आत्मशुद्धि को।।२१।।
हुई शान्ति पीड़ा हरने से, दवे बना इसको पढ़ने से।।२२।।
पदमरुचि के बैल को दीना, उसने भी उत्तम पद लीना।।२३।।
श्वान ने जीवन्धर से पाया, मर कर वह भी देव कहाया।।२४।।
प्रातः प्रतिदिन जो पढ़ते हैं, अपने दुख-संकट हरते हैं।।२५।।
जोन वकार की भक्ति करते, देव भी उनकी सेवा करते।।२६।।
जिस जिसने भी इसे जपा है, वही स्वर्ण सम खूब तपा है।।२७।।
तप-तप कर कुन्दन बन जाता, अन्त में मोक्ष परम पद पाता।।२८।।
जो भी कण्ठहार कर लेता, उसको भव-भव में सुख देता।।२९।।
जिसने इसको शीश पे धारा, उसने ही रिपु कर्म निवारा।।३०।।
विश्वशान्ति का मूलमंत्र है, भेदज्ञान का महामंत्र है।।३१।।
जिसने इसका पाठ कराया, वचन सिद्धि को उसने पाया।३२।।
खाते-पीते-सोते जपना, चलते-फिरते संकट हरना।।३३।।
क्रोध अग्नि का बल घट जावे, मंत्र नीर शीतलता लावे।।३४।।
चालीसा जो पढ़े-पढ़ावे, उसका बेड़ा पार हो जावे।।३५।।
क्षुल्लकमणि शीतलसागर ने, प्रेरित किया लिखा 'अरूण' ने।।३६।।
तीन योग से शीश नवाऊँ, तीन रतन उत्ताम पा जाऊँ।।३७।।
पर पदार्थ से प्रीत हटाऊँ, शुद्धातम के ही गुण गाऊँ।।३८।।
हे प्रभु! बस ये ही वर चाहूँ, अन्त समय नवकार ही ध्याऊँ।।३९।।
एक-एक सीढ़ी चढ़ जाऊँ, अनुक्रम से निजपद पा जाऊँ।।४०

पंच परम परमेष्ठी है जग में विख्यात।
नमन करे जो भाव से, शिवसुख पा हर्षात।।